

[illegible]

रुडं न मः गिवाया ॥ पवितात्रा रुनं ड च न ॥ आषाढादिचतुर्मास्यामथ प्रावराण
 उथा ॥ सिगासिगासकलुवां चतुर्दशमीषूच ॥ एतं प्रविष्टमाससं प्रष्टुम
 धर्ममकमात ॥ गङ्गा पवितामहिमा मनाथं दाषकात्रकं ॥ आषाढादिगुणेष्व
 वसुफ ॥ वज्रनोदने ॥ पवितां विदेधी न वंसा नियममिधु ॥ सोवर्णं प्राजुनं ता
 मुं रुगादिषु यथा कमात ॥ कलोकर्षासं ईदापि यथा मकिपकिणकं ॥ कलिं न
 दिज कन्याति मिगुली जिगुलीकरी ॥ एतेन गुणैर्गुरुं सृजं मन्यदशूपयुञ्जतं ॥
 पठवल्कलपमातुं को मंदर्पना ॥ इव ॥ मृजादिसं रुवं सृजं पविताय यममस्य ना
 अक्षरुत्र जतं नैवं सृजामास्यात्यविगकं ॥ लं गीति गदक्षने विंशत्यावाससफ
 या ॥ एकोणीषथवा सृजं विंशताम्राष्ट्रयु कया ॥ चैवागताम्राकलुवां गुल्यगुनं

नत्रा लर्कं ॥ द्वादशगुलमानानि ॥ आसादष्टा गुलानि च ॥ लंगविस्तारमनिनाच
 तुर्गुलिका निच ॥ गत्येवपिलु कास्यमचतुर्थसावैदवर्ग ॥ गंमवगात्रेडं कायपि
 उमतिमूचनै ॥ एतेन सृजमजाउनं ग्रंथिर्गुञ्जकनरु ॥ एतद्धितं वदं नृपलवकु म
 कुलत्रं उयतात्रकचन्दनकास्त्रीत्रे ॥ कसूत्रीचन्द लाचने ॥ रात्रिजने त्रिकाष्ट्रिचानै
 उदन्यतमननने ॥ ग्रंथयादशकलुवा ॥ अथवातकुसं रयथा ॥ अत्रैवायथा ॥ मरु मेकद्विच
 तुर्गुलं ॥ ॥ निचविगत्रा रुन कालिपवमस्या ॥ ॥ अथयं वगवसाधनैव ॥ यरु मरु
 यत्रैव ह्यदि ॥ गपूर्वादि मरुवा मयविग्य ॥ सूर्यार्घ्यं ॥ ॥ अथादि ॥ गिववीउन न्यासं कात्रयगाय
 नवूर्णेन यं वकाष्ट्रिखन ॥ एतमयं ॥ एतज्जलं सूर्यि दधिडीनं चयं चमी ॥ पतीत्या मूरुनय
 म्भ पूर्वमध्वक्रिय कुमात ॥ सध्याजाननवाभनत्रुपि ॥ पूनृषलवा ॥ ॥ एतन्निमथसंख्यं ॥ ए
 म शक्तिमलुथ ॥ पूर्वपूर्व क्रियदग्ध मूल मलु मदीनयना ॥ क ॥ दकं गुमयशा ननसंहि

[illegible][illegible]

श्रीं स्तुतव्यं लब्धं। न खत्री। न किं नृल खद्वा श्रीं वनव्य गृध्राम्बुजं। दक्षिणभाथ वामस्तुत
 मन्त्रं वीजपूत्रकं। नाग कस्तुर नीलाङ्कुरं विजानं यं चरि ४ कने ४। दक्षिणं गल्लक (मधे न व
 द्यपमासन स्तिरी। सदा गिवं नृसन्मूर्ति। जेवीणि कृत्वा। मयत्री ॥ ॐ हं हं निवमूर्ति यनम ४
 ॐ हं हं निवाय २॥ आत्मनयुषी २॥ द्वात्रयुजा ॥ ॐ हं गलपय २॥ हं गुनूया २॥ हं सनस
 र २॥ हं महालक्ष्मी २॥ हं वामुय न यवम्बुल २॥ हं वामुय न यविष्णु व २॥ हं नंदिन २॥ हं
 महाकालाय २॥ हं गंभय २॥ हं यमनाय २॥ हं ४ अम्नाय २॥ हं आत्राक्षाय २॥ ८ ॥ हं ४
 मीदि ६॥ हं ज्येष्ठादि ४॥ हं कृतयुगदि ४॥ हं सूर्यमल्लादि ॥ हं सिंहास्ताय २॥ हं य
 म्नास्ताय २॥ हं वृषहास्ताय २॥ हं सदा गिवमननं च विद्यानूयसदा मया। विष्णु वदव गालं
 वक्त्रायं कन्दमव वासिगुर्न वासुमीषाकं मिखायागुत्रयकं यनम ४॥ हं गुनूय कृत्वा २॥ या
 गिनी पूजा ॥ हं वामाय २॥ हं कृष्णाय २॥ हं नोडु २॥ हं काल्ये २॥ हं कन विक्त्र (ले २॥ हं

वलविकलन्ये २॥ हं सर्वहृदमन्ये २॥ हं मनात्मन्ये २॥ हं विद्याधराय ॥ हं गिवास्ताय २॥
 हं हं गिवाय २॥ यनद्वानि ॥ त्रियीजलि ॥ मूलमन्त्रं ॥ आवाहनादिने व २॥ या गिन्ना
 हीषम ०० ति ॥ जाय ॥ ॐ नमस्तुभ्यं यविष्णु वामिगु द्वायधीमहे। तन्न ४ गिवमृचादया
 न ॥ मी ७॥ अणु मन्त्रादि ॥ ०० ति ॥ अणु शब्देन विधि ॥ ॥ नाने गजने ॥ न्याम ४ ॐ हं स ४
 जैनकण कथं अम्नाय रुट् ॥ हं संसर्वरूपाय रुट् दयाय २॥ हं स ४ अम्नाय रुट् मन्त्रं मन्त्रं
 सखा ॥ हं स ४ अनादि वीक्ष्ये निखाये वीषट् ॥ हं स ४ सतनु भानल कवचाय हं ॥
 हं स ४ पकाय पद्म लिननगुणयाय वषट् ॥ हं स ४ अननकण कथं अम्नाय रुट् ॥ नन अर्घ
 पाण्युजा ॥ आत्मा अकल्पं किल कं च ॥ क्षान्ति ॥ सवाप सवागुजया। दधि त्रिन्दु विम्बं कुरु व
 प्रसका मेरु रुलक्ष्मी ४ अर्क प्रियां च ॥ ॐ हं स ४ मृत् अयाय २ ॥ ॐ हं स ४ अम्नाय रुट् लक्ष्मी ४ कि

वनदा रुयमूलपाणी मृत्पूजया जयगुरु निष्कन हं

सहिताय नमः॥ आत्मने ध्यानपूर्वकं ॥ द्वात्रिंशत् ॥ हुं हं ग ल प त य ॥ हुं गु नू त्वा ॥ हुं वा
त्रिंशत् ॥ हुं द ह ल्ये ॥ हुं स न स ह्ये ॥ हुं महा ल ॥ हुं वात्स ल्ये ॥ हुं वा
त्स ल्ये ॥ हुं विष्णवे ॥ हुं न चि ने ॥ हुं महा कालाय ॥ हुं रं जि ने ॥ हुं विनायकाय ॥
हुं वृषहाय ॥ हुं स्कन्दाय ॥ हुं द श्ये ॥ हुं व लुं य ॥ हुं आधनादि ॥ हुं ध म्मादि ॥
हुं ज ग्ग्यादि ॥ हुं क त य म्मादि ॥ हुं सूर्य म्मादि ॥ हुं सिंहासनाय ॥ हुं पद्मासनाय ॥
हुं वृषहासनाय ॥ हुं सदा निव म न र्क च विद्या नू र्द स ह म या विष्णवे द व ताली (वृष्णा ली
स्कन्द भव च । स्व गु रू चो ष्म र्मा क मि ल्या या गु नू र्प क य न मः॥ हुं व क्को ल्ये ॥ मा ह ग्ग्ये ॥
॥ को मा र्ये ॥ वृ ष्म र्ये ॥ वा ना र्ये ॥ हुं नू र्मा ल्ये ॥ वा म्मा ल्ये ॥ महा ल ॥ हुं ति या मि
नी ॥ हुं स ॥ हुं ज या य ज्म त ल ॥ हुं स हि ता य न मः॥ पू न द्वा ने ॥ शां त लि मूल म्मा

[illegible]

[illegible]

अमर

दर्वं गनरुसं पिता किर्णं वनदा रुय रुसं य मूलुख द्वा अश्रानिर्णं वी लम उम नू रुसं य व
 रुसं गिगु लिने ॥ वडु द लु क ना यी य वन भय यु ध रुसु कं । म डु न ल वि वि र्ण ल य व द व वि
 न उ न ॥ सि रु व भयि त्री धनं ग डु व भयि त्री य कं । अरु द ग रु डै द र्व नी ल क र्ण सु ग
 उ र्म । उ र्व व क्क म रु ग न र्म सु टि क र्ण वि वि न य न ॥ अ यी र्ण पूर्व व क्क गु नी ला त्य ल द ल
 पु र्ण । द क्क र्ण गु वि ज नी या द्वा भ य व वि वि न य न । द णि मी क सु म पु र्ण । कू क मा रु न र्म
 नि र्ण । य लु दी फि य नी का गी य भि र्म गु वि वि न य न । स्र क्क न्द रु न र्व नू र्ण र्व क म रु ल पु र्ण
 ॥ ध्या य न य स्र यु क । ला कि र्ण सि द्धा ति मा न व ॥ ॐ अ ध्या य र्ण ४ ध्या य र्ण ४ ध्या य र्ण ४ ध्या य र्ण ४
 र्ण ४ र्व र्ण ४ र्व र्व र्व र्ण ४ न म रु नू र्ण ४ रु ४ क र्ण ४ क र्ण ४ ल लि त स्र क्क न्द म रु रु न र्ण
 य आ ल्म न ध्या न यु र्ण न म ॥ न ना द्वा न पु र्ण ॥ क र्ण ल य र्ण १ ॥ क र्ण नू र्ण १ ॥ क र्ण द्वा न
 रि य १ ॥ क र्ण द रु र्ण १ ॥ क र्ण स न र्व र्ण १ ॥ क र्ण म हा ल र्ण १ ॥ क र्ण वा ल्म धि य र्ण १ ॥ व रु (१ ॥ क र्ण

[illegible]

यविमहं वामदवायसूधीमहं । तन्नाथानपुत्रादयान् ॥ सर्वलिंगमूढायदर्शय ॥ स्तौ ॥
 जूगन्धदि ॥ ॐ नितुनदवाचनविधि ॥ ॥ गतादोदग निवपूजा ॥ ॐ श्री कन्यायहवानी
 सहिताय ॥ गन्धर्वसुवर्णासहिताय ॥ महेश्वराय अम्बिकासहिताय ॥ महादेवाय
 मालिनीसहिताय ॥ स्नानेवमृतालीसहिताय ॥ निवाय (मेनीसहिताय ॥ पशुपतय
 धार्वनीसहिताय ॥ उग्राय मनीमनीसहिताय ॥ सर्वाय वामासहिताय ॥ श्रीवकाय ॥
 सासहिताय ॥ ॐ श्वराय कानीसहिताय ॥ नृदाय उमासहिताय ॥ श्री कन्याय
 दशमूढाय रुवाभीदादशकय महादेवाय धार्वनीपतय वृषरुधजाय सगलपत्रिः
 वानाय ॥ आवाहनादि ॥ जूगन्धदि ॥ ॐ निवा दश निवमूर्तिपूजा ॥ ॥ गतामालाद
 वी ॥ ॐ ग्लंगलयतय ॥ गममूढमामहेश्वराय ॥ लूवपूकाय ॥ ऊर्वासीसुसह्ये ॥ ऊर्वा
 ४ महादेव (नेह गवये चालिका लो य (ल्ये ॥ ॐ ऊर्वा ३ (नेह नरुनी उग्रवलाय ॥ सहनरुम

लवत्रयुं श्रीगुम्भयर्थे ॥ आवाहनादि ॥ जूगन्धदि ॥ ॐ निमालाचनविधि ॥ ॥ रुगवलि
 ॥ रुं तुकादि ॥ उयागदि ॥ ॐ कां कां कां कं रुगयालाय वलिगृह २ स्थाह ॥ आवाहनादि ॥ जू
 उगन्धदि ॥ ॐ नितुनदवाचनविधि ॥ ॥
 गताय रुमात्रयग ॥ दवतिला रुति पूरु नत्र आमनुर्वाकानय ॥ पूर्ववद्विधाननदाना
 दिर्यकिमुमल ॥ आमनुलवाचवि (गीय ॥ ॐ आमनु गीसिदवग सहदेवाग (लश्वत्रे ४ मनु
 लाकपाले श्व सहिताय त्रिवानक ४ निवदयामाहं रुख्ये यदवहियविशर्क । नियमश्च कत्रिशा
 मिषत्रमं गवा रुया । सर्वकाने लोपाइ काय सर्वतलाधियायच ॥ आमनु नप्रविशर्क २ ॥ पू
 जा उ (ध्वधूनक ॥ जूगन्धदि ॥ धूतधूनका वगाहावयलयाविधानं ॥ दय्ये (ल पूग वृ (ल
 नजूरयर्मी लिखा । तइयनि सुवर्णाक्षनायाय सेधूपदीपदत्ता ॥ निववीजनन्यास निववीज
 नपूजायत ॥ आत्मानं मूलमर्कं ध्यात्वा दवस्यादर्शय ॥ यथादवस्याना मगहलीकत्वा आ
 शुंजलिना ।
 चतुर्थकपद ।

नाहिकं समर्पयामि श्रुतिवाक्य ॥ श्रुतिजामलुनसूत्रविधि ॥ ॥ नमो गंगे गंगे गंगे गंगे ॥
 ॥ ॐ ॥ यथाश्रमलुनसूत्रापूर्ववद्विनादि सर्वकर्मालिकात्रय ॥ विष्णवे ॥ गंगे गंगे गंगे गंगे ॥
 ॥ ॐ ॥ कालात्मना त्वया देव यशस्वं मा मर्कं विष्णो ॥ कर्तुं क्लृप्तं समस्तं कर्तुं शुभं च मत्कृतं ॥ त
 दस्तु क्लृप्तं मत्कृतं ॥ पूष्टं मत्कृतं ॥ सर्वे त्वनामना भूयः पवित्रं त्वदी कृतं ॥ पूष्टं यश्च म
 खवृत्तनिधमं भूयः सर्वकर्मलं वा इकाय सर्वतत्त्वाधिपाय च ॥ ॐ ॥ निवर्तताय निवर्तते भूयः
 य ॥ वृत्तकर्मलं वा इकाय निवर्तय पथमपवित्रं कर्तुं नमः ॥ विशातत्त्वाय विशातत्त्वे भूयः ॥ विष्णु
 कर्तुं वा इकाय निवर्तय द्वितीयपवित्रं कर्तुं नमः ॥ ॐ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥
 पा इकाय निवर्तय तृतीयपवित्रं कर्तुं नमः ॥ ॐ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥
 नाहिकं ॥ मूलमलुनसूत्र ॥ गंगे गंगे गंगे गंगे ॥ ॥ ॐ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥
 ॥ अग्नौ नमः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ ॥ ॐ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥

नर

गंगे गंगे गंगे गंगे ॥ ॥ धनलियरुमूल ॥ गंगे गंगे गंगे गंगे ॥ ॥ गंगे गंगे गंगे गंगे ॥ ॥ गंगे गंगे गंगे गंगे ॥
 म ॥ चतुष्टयं वा कृति यवक्ष्यामि ॥ घृतदीपवृत्ति का ॥ वलिपुदानी ॥ दवपूजा वास्तवपूजा ॥
 पूर्व्यागुदक्रिष्णं नृत्वा ॥ संप्रवसागतं ॥ संप्रवृत्ति ॥ आसंसा ॥ अरिधक ॥ आशीर्वादा ॥ ॥
 दीपवृत्ति का निवर्तय न पूजय ॥ ॐ ॥ गंगे गंगे गंगे गंगे ॥ ॥ सुयमानीमिदं वास्तवं संप्रवृत्ति वास्तवं निवर्त
 ॥ नियमं च कनिष्ठाभिधनं गंगे गंगे गंगे गंगे ॥ ॥ सर्वकालनपाइकाय सर्वतत्त्वाधिपाय च ॥ ॐ ॥ त
 नियम ॥ पागर्तकात्रय ॥ ॐ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥
 सूत्रविज्ञानाहर्तकात्रय ॥ पूर्ववद्विधानेन द्वात्रिंशत्वाचर्तकात्रय ॥ यथाश्रमलुनसूत्रापूर्ववद्विनादि सर्वकर्मालिकात्रय ॥
 सूत्रविज्ञानाहर्तकात्रय ॥ अग्नौ नमः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥
 ॥ अग्नौ नमः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥
 ॥ ॐ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥ ॥ त्वत्त्वाय त्वत्त्वे भूयः ॥

कृत्वा ध्यानं पूजा कृता नित्यं । विष्णुयय कुगन्ना धः दमना प्रादुर्न युनि ॥ आसक्ति गति दय म प्राग काल म
या प्रहा । कर्तुं यत्तु यथा लार् । पूर्व यव त वा रूया ॥ दमना प्रादु लया विष्णु ॥ ॥ रुद्र पुसा द हं रुद्र ह
मय सै निधी रुवा । निव कार्य समुद्दिग्ध न गथा सि निवा रूया ॥ दमना म कुल वाक् ॥

कृ ३

ब्रह्महा ८ म पु क ज्येष्ठ सह ग्रीह न्य ग ववा । मयि न र्द्य य त न । प्राले क लु गते तयि । सर्व सो खा पु द गार् । उं का न
प न मा गति ४ । सा कं ली ह गु द क थ द । म न य । ज नी । ना द वि न्द्रा क ला कु र्क य न मी नि वी ली म क र्क । वा ग्ध र्व सि द्धा
क र्क य र्क । य न मा स द्धा क र्क । धू ना र्क सै र्क । वा ग्ध र्व स र्क सै र्क । य व व र्क र्क सि द्धा र्क । य न मा र्क य न
मा क र्क । सि द्धा क र्क य न म हा नि वी ली कान र्क । स र्व या य वि नि म्क य न र्क भा क ता ग ति । स र्व न सै र्क म
हा द र्क न वा वी र्क ॥ ॥ ह वि ली क न पु ज्ञा ॥ नि व वी ज न न्या सा र्क या पु द्धा र्क ॥ अ र्क य र्क का स
र्क ॥ ध्यानं प १० ७ ॥ वृष ता र्क सि हो द वी म ष ला क ठि ह वि हो । स र्व क र्क ल । म हा यो ज रा ख । उं द क
र्क ॥ ॥ गि ली ल म उ र्क य व द क र्क न र्क र्क य व म क ॥ ॥ स र्क य न य न काल स र्व काम रु ल पु दो
॥ ॥ पु न र्क द या दि पु र्क न ॥ नि व य ज्ञा य क र्क ॥ यो तो ली ष क य त ह ष ल के ली माला सि माला वे

वि ५

द वी दान वती । म सा न निल यो ना म त्रि । म वा रु नी ॥ दि उं जी व ति द क य र्क म थ नी जी ली ल ज
वल ली पा र्क म ह न तां स दा ह त्रि ह नो जी व त्स ग र्क । ध नो ॥ ॥ उ र्क म र्क ॥ अ या वा त्म ल म्भ न अ ध न
ली त र्क य र्क पूर्व पूर्व वा या र्क त्रि ल मा न नं ॥ उ र्क क र्क य र्क ॥ अ ला ग य द । व र्क क व ल म व ला व ल
हि तं त श्या गि तां । म व र्क । त म न्द य न मा स र्क य म खि ल ह ता धि र्क र्क र्क ॥ स दा नि व र्क ति ॥ ॥
उं न म ४ नि वा य ॥ अ र्क यो सा द म मा सा य या या द चि नि र्क त न ॥ पु द र्क र्क स र्क र्क म र्क या पु क र्क म
नि ॥ या । म ष क र्क र्क स र्व दि य दि द्धा व ला क य न् । कु ल ना हि पु न र्क य उ य वि द्धा र्क ना न न ॥
नि नी र्क र्क च कु ल य या र्क र्क ता उ ल क ले ॥ वि द्धा य द्धु म नु ल व न्म ल य र्क र्क म र्क ॥ ख र्क म र्क म
दा नं पु र्क र्क स म ता म यि । कु वी त व र्क म र्क क र्क क र्क व स मा न्ना ॥ स र्क र्क न स माल य क ला र्क य क
य र्क । गि ली ल प त्रि धानं व व न्म ल य र्क न र्क द ॥ त्रि द य म्भ द क र्क आ द का र्क र्क न ना म धा क र्क

यक ४८ हिम तिष्ठ सिद्धि लं समासनं रूपयामन ॥ वा घ्रांति नार्चनं अत्र गन्ध
दि ॥ पुनः (मम धनं) ॥ अं शि ३ वा वा ही ह मा ३ ह्य लु टा सी हा ल वां कृ पा स्त र सा हा
३ ॥ अत्र १०८ ॥ उपविश्य ॥ वा प्र न द हि ना ॥ अति हे व व न पु या घ्रांति न (मम धनं) समाप
२ म नि व ल्य स यं व द्वा अं गु रं न स द मि रं ॥ त कूं न्या मि स्त व द्वा यं म (मम धनं) व द व नी ॥
अनामि कै वि घ्ना जं क निष्ठं ल न्द म व व न र्वा न द न्दु द व न्दु न र वा यां सर्व द व न्दु
०० या व म न वि ध न न क न्दु दि क न न ॥ क न्दु दि वि ही न न्दु द व न्दु न क न्दु य

२ हा ई ध न का व मा त म ना थ पू जा वि धि ॥ सर्वा वि धु म क या उ वि ध य ॥ वा वा र्थ सा य
वा म म नु ला प त्रि स्ता य ॥ त ती पु न्दु न्दु न म स्का य ॥ न्या सा ॥ उं ॥ कां ह द या दि
क तु (की न) ॥ अर्घ पा न्दु ज ॥ रू त गु द्वा त्मा य ज ॥ त त ४ पू ज न ॥ आ स न ॥ उं ॥ अ
रा ना दि व कि क म ला स ना य पा य ॥ उं ॥ मा त क्षी म ना य पा य ॥ आ न ॥
उं ॥ उं ॥ अ पू र्ण व र्ण म हा त कूं म क व कु रि ता व न ॥ अ न्दु य व न ह स न्दु व न्दु य
हू व न्दु न्दु त ॥ वा मा न्दु म ना द वी न द्वा पा दि व रू पि नी ॥ मा त क्षी मा त क्षी
नी द वी नि मा ल्य स्त रू पि नी ॥ आ न्दु य न म ॥ अ न्दु सि ॥ उं ॥ उं ॥ ह स
द म स व न्दु सि दि मा त (मम धनं) स द द म स व न्दु यं उं सि दि मा त (मम धनं)

दवीयाया पू ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दयादिषु उन्मिषू उनी ॥ वलि ॥ सहायम् ॥
 डांट कथि ॥ भूपदीय ऊपसु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दयादिषु उन्मिषू उनी ॥ वलि ॥ सहायम् ॥
 गगनिन उक ना लह सुव ॥ कर्क नद पत्र विविर्ता ती कु मूल क
 पाल ॥ वक्रा न मत्स्य मी सा सवत्र सा विवि (वे म्मा) दि तं पु न स म्मा मात
 (मि) सी स हे व स न न पत्रि वृ तं नो मि सा दि वृ ना थ ॥ नमस्तु ॥
 रु ल ग म्मा ना दि म्मा वृ दि ॥ म्मा ना दि वृ ना थ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दयादिषु उन्मिषू उनी ॥ वलि ॥ सहायम् ॥
 व निी ति य ति ला वि द्या ची १० पूर्वी स म र्थ य ॥ प न र्हि द्या मा स म्मा

गृहीत्वा सर्वं यथा युक्तं कर्तव्यं दद्यात् ॥ गगिनी पुत्र हि सु सु पा म्
 ही ला ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दयादिषु उन्मिषू उनी ॥ वलि ॥ सहायम् ॥
 सा सु न य ॥ वलि क न क ना थ वि स र्ज य त् ॥ प न र्हि द्या मा स म्मा
 य त् ॥ क न क सु न नि म्मा ल्य दि य त् ॥ गत ४ क न क स प वि शी द क न
 वी रि ष क द द्या ॥ सा पि ता म्मा वृ ट्ठी उ उ मा न ता या गि नी म्मा स म्मा
 म्मा ॥ मुं या (ग) णी पु व न य म्मा दि ॥ क उ मा न न क म्मा द म्मा गृही त्वा
 क र्प न स्त्री का न क र्प य त् ॥ वृ णि मा न क ना थ पू जा वि ध न ॥ ॥

ॐ कर्पूरी कूर्म वेव वा म समी भा तु च नून उता पक्ष समा युक्तः पवित्रा नान
ले पितॄ ॥ ॥ आचार शु कृ प कृ उ मिथुन सु दि वा क न अष्ट मी च व तु द्वि ग्म
कर्तु वी स प वि उ क न त्प मा दा न्न क र्तु वी क र्क ट सु दि वा क न अ वि ग्रा
धन क र्तु वी या व च उ न पू र्णि मा ॥ उ रु मा व टि न प्रो क्तः म ध मा रु म ग्रा व न
अ ध मा रु म रा ड व ग्रा ध म वि ह ति वा म्मि न ॥ का र्क क प र्च ट वा नी ति च
ग्रा उ ष्म नि के ॥ आ धा र स्य च तु द्वि ग्म म च ग्रा ओ ग न त्र त्तो पु ग र सु
ति वि ष्ट या प वि ग्रा गो रु न प्रिय स व त्प र कृ ता पू जा रु न प्रो धा य स व
य प वि ग्रा गो रु न के न नि ष्य य न द्वा न न न य न ह्ना त्वा प वि ग्रा र्थ ना व

ग्रा रु नि य पु न ॥ त स्य द्वा द श व र्षा म् पू जा रु न वि न य न्ति त्वा सु व र्ष
स र्ग स्या उ ता यी त्र उ न सु धा द्वा प त्र ता मु स्र ग्रा नि क लो क र्पा स म व न
य ॥ थ क र्तु ग मा दा य गु नि मा न सु र्ग गु ति क र्म नो क र्ता गु नि रु
त्वा पू र्ण सु पू र्णि ता प वि र्ग का त्र य द्व वि स स्का ने न प वि उ क वि न य
नि म हा ग्रा म् दु श व (ग म का न्य न क म ॥ पू जा रु पू ज प रु पू दि वा च
क स्य वा क्त क गु न्द्रा दि मि (ग म षा टि यु न रु त्या दि र्हि र्ग ता प वि
ग्रा गो रु न द वि वि न य्म त्या गु पा न के का य न मा न स वा पि व र्च न
न ध न न च क र्तु वी दे व द व स्या त् प वि ग्रा गो रु न प्रिय ॥ प वि ग्रा दा म

नवेव दवदुवववववव न।सूर्यव नुा यत्रा (नव. शिवत्रा उ वि (विचन
शिवदुव म हा ती (थ. महा नु म मा ग म। जूवेव कीय न दी द्वा. मा
नूकुल शिव रवे ॥ ॐ नित्य विजा गो ह न पु मान म नू। ॥ य वि जा गो
ह न रु ल ॥

ॐ ना ग ना जा य न म ॥ जूथ व र्मा र्थ सू उं व व क्ष मि ॥ ॐ सा ग न ना ग ना जा
नं संधा द या मि ष व र्ष य ॐ ह म हा वृ थि वी म लु ल स्वा हा ॥ १ ॥ ॐ जून
न व त्रि क न सा ग न सा ग न ना ग ना जा नं संधा द या मि ष व र्ष य ॐ ह
म हा वृ थि वी म लु ल स्वा हा ॥ २ ॥ ॐ व नू ल ना ग ना जा नं संधा द या मि
ष व र्ष य ॐ ह म हा वृ थि वी म लु ल स्वा हा ॥ ३ ॥ ॐ न मु क ना ग ना जा नं
संधा द या मि ष व र्ष य ॐ ह म हा वृ थि वी म लु ल स्वा हा ॥ ४ ॥ ॐ सि र्म ना
ग ना जा नं संधा द या मि ष व र्ष य ॐ ह म हा वृ थि वी म लु ल स्वा हा ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं त क ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ ८ ॥ ॐ जू क ता स ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि
 वी म णु लं स्वा हा ॥ ९ ॥ ॐ म र्म सं धा द नं ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य
 ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा हा ॥ १० ॥ ॐ व णु य ति रु द्रा न क स्य वा ल णु कि
 ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा हा ॥
 ॥ ११ ॥ ॐ ध र्म मू य मा ह ॥ ॐ णि ति द्रु ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य
 ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा हा ॥ १२ ॥ ॐ णु ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा हा ॥

स्वा हा ॥ १३ ॥ ॐ णु ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ १४ ॥ ॐ कौं का णि की ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ १५ ॥ ॐ श्री श्री सु म तु ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ १६ ॥ ॐ स्रु त ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ १७ ॥ ॐ उ व म ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ १८ ॥ ॐ वै द्य ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा
 हा ॥ १९ ॥ ॐ जू न कं थ ना ग रा जा नं सं धा द या मि षु व र्ष य ॐ ह्रीं म हा वृ थि वी म णु लं स्वा

दीपस्तोत्रा ॥ १८ ॥ ॐ श्रीं श्रीं वृद्धमध्वन नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥
रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ १९ ॥ ॐ मूर्खसी नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुज
म्बू दीपस्तोत्रा ॥ २० ॥ ॐ पूर्वहृदय नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुज
म्बू दीपस्तोत्रा ॥ २१ ॥ ॐ गणुकी नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुज
म्बू दीपस्तोत्रा ॥ २२ ॥ ॐ जूनवीशु नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुज
म्बू दीपस्तोत्रा ॥ २३ ॥ ॐ हनिने ध्वर नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥
रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ २४ ॥ ॐ किन्नरी नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय

य ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ २५ ॥ ॐ श्रीं कर्पूतदी नाग राजानं संधा दया
मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ २६ ॥ ॐ श्रीं दूतीर्थ नाग राजानं संधा दया
मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ २७ ॥ ॐ सांसा कर्मनिवा लशु किनाग ना
जानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ २८ ॥ ॐ श्रीं मनिष कालवृक्ष
नी नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ २९ ॥ ॐ पूर्ववती
नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ ३० ॥ ॐ श्रीं सयूक्त
त्रनी नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ ३१ ॥ ॐ सुमिश्र
ड नाग राजानं संधा दया मिषवर्षय ॥ रुजम्बू दीपस्तोत्रा ॥ ३२ ॥ ॐ मन्दाव

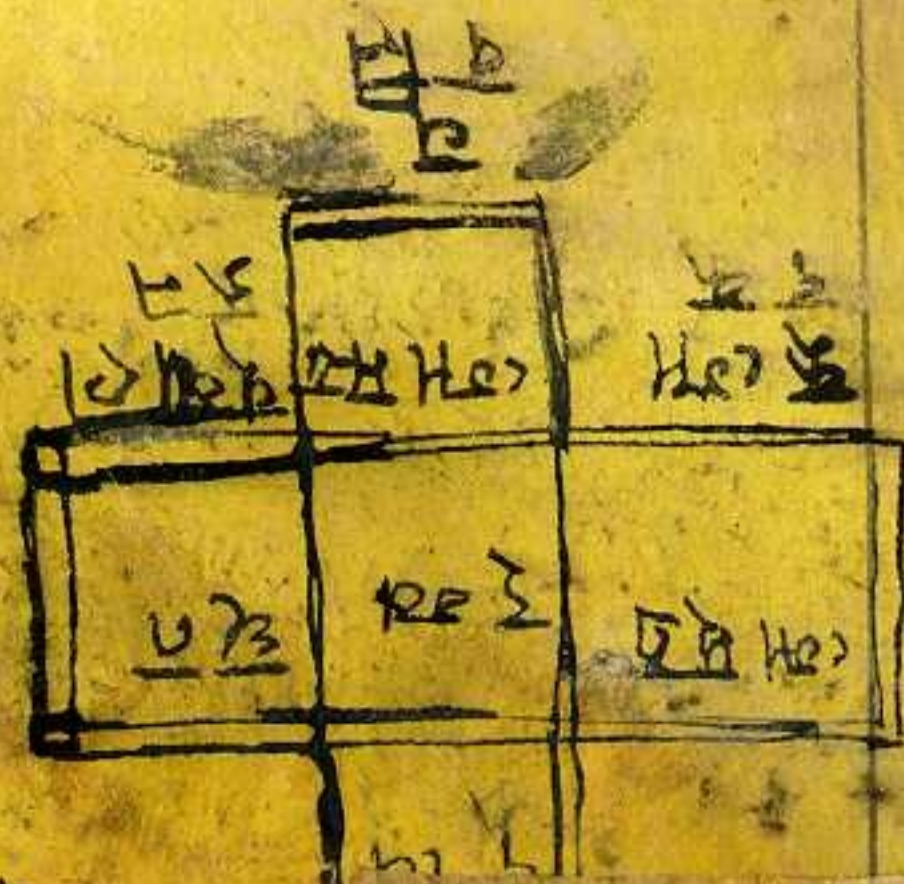
नका ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ३३ ॥ ॐ नूनक
वरु क ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ३४ ॥ ॐ श्री
रुष ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ३५ ॥ ॐ नूनक
वरु क ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ३६ ॥ ॐ वरु
या नि ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ३७ ॥ ॐ श्री वा
शु कि ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय जालयुस्व ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ३८ ॥
ॐ श्री त क क ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय कुंजने ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा
॥ ३९ ॥ ॐ क क क क ना ग ना जानं संधा दया मिषु वर्षय त की ना ग सत्ये न ॐ ह ऊ

मू दी य स्वा हा ॥ ४० ॥ ॐ ख याल ना ग ना जानं संधा दया मिषु न वरु सत्ये न
ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४१ ॥ ॐ श्री य द ना र ना ग ना जानं संधा दया मिषु य गा व
सत्ये न ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४२ ॥ ॐ श्री महा य द ना ग ना जानं संधा दया
मि महा वल सत्ये न ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४३ ॥ ॐ कै श्री लि क ना ग ना जानं संधा
दया मिषु म सत्ये न ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४४ ॥ ॐ श्री महा य द ना ग ना जानं
न संधा दया मि महा वल सत्ये न ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४५ ॥ ॐ श्री कू लि क ना ग
ना जानं संधा दया मिषु म त क शु ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४६ ॥ ॐ श्री धृ त ना व
ना ग ना जानं नी ल दं तु सत्ये न ॐ ह ऊ मू दी य स्वा हा ॥ ४७ ॥ ॐ उ नू वा व त ना

क कर्कत कर्ण ख काल कलिक कर्तव्य नमस्तुतु द व द नमस्तुतु मिस्त्रि स हा साम
मिस्त्रि दधु धनमस्तुतु दधु धनमस्तुतु वरा कितामस्तुतु जे ना कितामी ना वतु
दाभा दनत वन श्रीका कस्तुतु हा श्रीका कस्तुतु न श्रीका कस्तुतु नद रुदा ही मस्तुतु द नः
किस्त्रि साम मिस्त्रि व नू नादि ना ग ना जी य म म जू य ना ग ना मिस्त्रि काम ना
र्थ श्री ना ग ना अत्या ॐ म र्थ पु सिद्ध स्वाहा ॥ ॐ त्व जू र्थ द स्वा ॥ ना ग ना
प ॥ ॥ सं २१० आषाढ कृष्ण नवमी वृद्ध काल थ कृष्ण था या शुभ
श्री व कु ना ना य न स म्म ॥ ॥

ॐ नमस्तुतु कारये ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ मस्तुतु संस्तुतु सी नं एगवर्जमस्तुतु वरा पुन वरा
स्त्री दवी पावती वनि पुस्तुति ॥ पर्वतु वाच ॥ धात्रि भीषनमा विद्या पुस्तुति मित्रा मस्तुतु
मा नन ना गी हितार्थ यवा लाना वद नो यव ॥ गस्तुतु मस्तुतु कानां व ॥ अग्नि वरु एव व
व ॥ गस्तुतु कस्तुतु रयस र्थ वृ विद्युद मिस्तुतु वृ व ॥ गस्तुतु सिंह कर्मी दंष्ट्रा नदी नदस्तुतु मस्तुतु क
अविनाश वस्तुतु र्थ वृ र्थ गस्तुतु उरु वस्तुतु ॥ गस्तुतु वस्तुतु ननी दवी नृ भी व वस्तुतु कर्मी तथ
तां वविश वस्तुतु वस्तुतु न कथयस्व मयि वस्तुतु ॥ ॥ गस्तुतु वस्तुतु उवाच ॥ स वस्तुतु वस्तुतु मस्तुतु गस्तुतु न
ना हित कर्माणि ॥ त्वद्वचनादमि कयत् कथयामि नस्तुतु वस्तुतु ॥ दवी पुस्तुति मित्रा विद्या सर्वगुरु
विना मिनी वन भी सर्वदुष्ट नां सर्वपापविभाव नास्ति वा त्रय हती नी व ॥ उक्तु ना हित कर्माणि

माहनीलकमलदर्शनं॥ उं उं धं ऊं रुं श्रीं तथार्चिद्रुः कोटि सो लब्धदायकं॥ धनद
 कलहं शैवः दीर्घमायुर्विनामिनी॥ उं शुं कं ऊं लकं शैवः धनहानिश्च निश्चिती
 यानीरुक्तं तथार्चिद्रुः सर्वसिद्धिप्रदायकं॥ विनायकं तथार्च्यं सर्वकामरूपप्रदं॥
 रवद्रुगिभूतकं चिद्रुः गरुडभूतयै रवत्॥ मंगलाष्टकचिद्रुनिः मातृकाविः उं
 श्री रवत्॥ सर्वसिद्धिमवाप्नोति सर्वसंपत्प्रदायकं॥ उत्पलानिच चिद्रुनिः
 लक्ष्मीसंपददायकं॥ चतुर्भुजचिद्रुनिः ज्ञानार्थं रसै रं गुरं॥ माहनी चिद्रुदर्शनं



॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इति श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्णस्य वचनम् ॥ ३॥ १ ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अ वै

ॐ नमो
ॐ नमो वैष्णव पति नारायण विधि

ASHA ARCHIVES 3655

१३० अथ का अष्टम सर्ग काय्यादी कूलमार्कलुह वंके नोमियकाधसिद्धि थं उकिमैकरुलुद॥
१३० अथादि॥ अस्मत् श्री ३ कृत्तिकादवी प्रणिष्ठादि नव वर्ष वन्धन को मारी या गमर्चन
सगमवतल श्री कृत्तिकादवी पूजां कर्तुं श्री कूलमार्कलुह या ध्यानम ॥



२ अक्ष मिया विक्क मूका यान्थन

३०३

कोना १ अंगु मि ४ हाक ३ १०८

३०३

का ना १ हा ६ १०८

३०३

का ना १ अंगु सि २ हा क ३ १०८

३०३

का ना १ हा क ३ १०८ आसंनुन

३०३

का ना १ हा क ३ १०८ आसंनुन

०

जव १०८ दूयक मास ३ १०८

०

३ आसंनुन गकि कल अया न

०

कुरा ॥ हा क ३ १०८ थाय २ विर

३०३

का ना १ हा क ३ १०८ आसंनुन

का ना १ हा क ३ १०८ आसंनुन

का ना १ हा क ३ १०८ आसंनुन

का ना १ हा क ३ १०८ आसंनुन

३००

२महाधवयावृक्षप्रयाग
२को२१ वरूजता
२को४ मगसं०
२को४ कोइ
२को७ लोक्
२को१ कोस
२को२ लोक्
२को३ इत्यं
२को३ कंकोडो
२जता२१ अइवा
२शे २० वरूमवि
२सायइसासासका
२यइअसंसासका
२य२० कस्तिकिताक
२व्य२० नंइत
२व्य२० इत
२व्य२ मसाभव
२व्य१ गलास
२व्य१ कंत

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥

[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or document.

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 कृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्वाक्यं ब्रूयात् ॥
 त्वं ह्यहम्भक्त्या युक्तात्मना वीर्यवान् ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुतसः ॥
 मामकाश्च पांडवाश्चैव कीदृशं करिष्यते ॥



[illegible]

[illegible]

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript or ledger entry.

